श्रीगुरुमाई का आशीर्वाद

शनिवार, २१ नवम्बर, २०२०

'श्री' वह है जो चमचमाती है।
इसका अर्थ है कि निर्मल जल 'श्री' है—
जहाँ समस्त प्राणी जीवन पाते हैं।

'श्री' वह है जो रमणीय है।
इसका अर्थ है कि प्रत्येक हृदय 'श्री' है—
जहाँ प्रेमाग्नि तेजस्विता से धधकती है।

'श्री' वह है जो ऐश्वर्यपूर्ण है।
इसका अर्थ है कि सद्गुणों से युक्त मन 'श्री' है—
जहाँ प्रशान्ति वास करती है।

'श्री' जीवन के चार पूजनीय लक्ष्यों में से एक है।
इसका अर्थ है कि जीवन 'श्री' है—
जहाँ भगवत्प्रेम सच्ची सम्पदा है।

'श्री' के अपने मर्म में, विशुद्ध उदारता है।
जो कुछ भी 'श्री' है उसे तो मनोरम होना ही है,
उसे तो व्यापक होना ही है।

'यशस्' का अर्थ है, उसे श्रेय देना
जो जीत का वास्तविक अधिकारी है।
इसका अर्थ है कि 'यशस्' लिया नहीं जाता,
वरन्, यह दिया जाता है।

'यशस्' का अर्थ है कड़ी मेहनत का फल।

इसका अर्थ है कि कई लोगों का सहारा अत्यावश्यक है,
आज और हर दिन।

'यशस्' का अर्थ है वह कीर्ति जो दूसरों का उत्थान करती है।
इसका अर्थ है कि यह व्यक्तिगत लाभ से सम्बन्धित नहीं है,
वरन्, यह उपलब्धि के हर्ष को दूसरों के साथ साझा करना है।

'यशस्' का अर्थ है महानता के तेज को प्राप्त करना।
इसका अर्थ है कि यह प्रकाश सबके लिए है,
क्योंकि प्रकाश किसी एक व्यक्ति द्वारा बन्धक नहीं बनाया जा सकता।

'यशस्' के अपने मर्म में, कृतज्ञता है।
इसका अर्थ है कि इसका आनन्द तभी लिया जा सकता है
जब दूसरे जैसे हैं,
वे जो हैं
और वे जो करते हैं उसके लिए
उनकी भी सराहना की जाए।

'श्री' के सच्चे अर्थ को समझो
और स्वयं को उसके आलिंगन में पाओ जो भला और महान है।

'यशस्' के सच्चे अर्थ को समझो
और स्वयं को उनके बीच पाओ
जो तुम्हारे साथ
अन्धकार पर प्रकाश की विजय का उत्सव मनाते हैं।

जब हम संसार की इस भूलभुलैया में,
रास्ता खोजना सीख रहे हैं,
जिस संसार से उपजती हैं विचित्रतम परिस्थितियाँ
और प्राप्ति की श्रेष्ठतम सम्भावनाएँ,
तब 'श्री' और 'यशस्' के मूर्तरूप,

हमारे परम प्रिय भगवान नित्यानन्द,
अपनी अनन्त कृपा
और अपनी अहेतुक करुणा में
हमें सकुशल और संरक्षित रखें।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।